

है न मालुम उससे क्या कराता है अतः  
 आपका प्रहो से पधारना भी इस दृष्टि से  
 अच्छा ही हुआ। श्री हरदेवजी को ह. के लिये  
 पत्र आया है श्री पुरोहित जी परिस्थिति वश  
 सपरिवार वाहा चले गये हैं। श्री चम्पा लाल  
 श्री बीमानी की मृत्यु हो गई है तथा स्वयं सुगुण है  
 उनकी परिस्थिति अप्रसन्न मिली है। संस्र संस्र  
 नहीं आता है क्या कहें और वाक्की वाक्की की  
 उस नालकसे छोटी खर्चीय कल्प और समाप्त  
 हो चुकी है। उससे छोटा बालक भी बीमार है  
 अब कुछ तेहत मालुम होती है। रवि, सोम, आपकी  
 चरण न कम्पा से ठीक निकल गये हैं रात दिन  
 ज़री २ आशंकाये बनी रहती है। अभी २ कुम्हे  
 के लूटे आने के समाचार मिले हैं कृपया पत्र  
 अवश्य दीजिये वहां का जल अनुकूल आगया  
 होगा। श्री गुरुदेव की लांछनी से सादा जयशंकर



CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri



पधार रहे हैं। यदि उचित हो और इच्छा हो तो  
 यहां पधारें यहां से मैं और आप साफ रहें  
 चले १-२ दिन में यहां भी कोई बात नहीं है।  
 २-३ पत्र में गीता भवन भी भेज चुका हू  
 गत ता. १२ की रात्रि को श्री १-५ मात्र के यहां  
 चोरी हो जाने से तथा बत मान परिस्थिति के  
 कारण श्री मात्र स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है।  
 आंखें बहुत जोरों से दुख रही हैं शिष्य मिलने पर  
 मेरे यहां आज कल जमुना प्रसाद जी हस्तेरा के  
 योग्य विद्वान् ठहरे हुए हैं वर से ले लिये दालियां-  
 के यहां की कागज की रजेन्सी दिलवाने का है।  
 स. की आज शक्यता है और सीमेन्ट की रजेन्सी के  
 लिये भी कहते हैं पर वान ११ वर्ष पूर्व भी जब यह  
 आप थे तब भी इन्होंने मुझ से कही थी ऐसी आशा है  
 यह आपके दर्शनों के भी अत्युत्तम है। इनकी  
 इच्छा तो मुझे आज भेजने की ही थी किन्तु गत रात्रि मुझे  
 भी ज्वर रहा है अतः वेद्यों की अनुमति नहीं है।  
 अभी २ श्री चने राजा द्वारा रात हुआ है कि श्री महेश  
 भी यहां आये हैं। श्री वल जिन्नाथ जी का—



श्री:। भरतपुर मार्गशु. ७ शनि  
सं २००४

अनन्त-श्री:

पूज्य पादु श्री बाबा महाराज के पुनीत पादु पद्मों में  
दास के कोटिशः पुणाम स्वीकृत हों। गत परसों रात्रि को  
श्री हरदेवजी का पत्र मिला कल उत्तर इसकाण नही दिया कि  
मैं आज की गाड़ी से श्री भावीजी को लेकर आ रहा था किन्तु  
आज मौसम एक दम पहां का बदल गया बृष्टि के कारण  
शीत अत्यधिक होने से सगण को किस तरह लाया जाय  
इससे गत कल श्री चनेशजी ने जो भीषण बदली  
है उससे आज जवा भी कम है अतः मैं आज सगणों से न आ सका  
और भावीजी का बिचाली ३-४ दिन और ठहरने का  
होगा है। धौंरी अब तक न पहुँचने का कारण यह है कि  
कन्नौज से व्यापारी डेरा लगाने वाले गत परसों ही आये हैं  
उन्हीं के कारण बिर्लवं था श्री महेशजी के समीप कल (वि)  
को श्री चनेशजी स्वर्ण जा रहे हैं ३-४ दिन में आशा है  
धौंरी का सब पुबन्ध ठीक हो जायगा यदि वहाँ चित्त  
नहीं लग रहा हो तो आप वृन्दावन पधारें और मुझे  
पत्र दें ताकि उसी दिन मैं वहाँ पहुँच कर उनसे न  
पुबन्ध कर दूँ हमारे नो. रा. ता. २५ को बम्ब ३



भरतपुर

ता. ६९-१२-४७

श्री बाबा महाराज के चरणाभ्युक्तों में मेरी साष्टाङ्ग प्रणाम  
पहुँचे। आपकी कृपा से सब राजी खुशी हैं। यहाँ पर मेरे और  
सबों के राज हो गई है। आप कृपा कर देवदत्त का लेह  
मिजबोद। मेरे और पित्रा के बहुत जोर से हैं।

गुरदेव परसों आगये हैं। यहाँ पर सब सही पडने  
लग गई है।

यहाँ के समाचार बहुत बुरे हैं म्हा किया जाय। आप  
आज्ञा देते हो मैं आपके पास आजाऊ।

सब बच्चे व सभी सब आपकी चरणाभ्युक्तों में साष्टाङ्ग प्रणाम  
करती हैं।

अप्यका दामानुदास

आज्ञाकारी

गिरधारी



श्री बाग महाराज के चरण कमलों में मेरा साष्टांग प्रणाम पहुँचे,

मैं प्रपने बारे में तो क्या लिखूँ क्योंकि आप  
मन कुछ जानते हैं यह बात दूसरी है कि जो जानना चाहें। मैं  
उम्मेद करता हूँ कि आप सकुशल होंगे। मैं ने ६६ चिट्ठी लिखी है  
और ने मन मेरे पास रखी हुई है क्योंकि शापद उनमें कोई  
अनुचित बात लिखी है। मिलूँगा उस समय दूँगा। -

सारांश यह है कि "अन दुःख के दिन बीतत नाही"। मैं यह  
बहुत सोचता हूँ कि हम सब संसार के जीव हैं और परमेश्वर की के  
रिगलौने हैं हम इसमें कुछ नहीं कर सकते क्योंकि शुभ और  
अशुभ दोनों साथ चलते हैं। शुभ यह था कि मैं और मेरे  
मुँह में से जबकि और ने अपना मुँह बंद कर लिया मुझे  
दाँतो के बीच में दबा करके अगर आप के संस्कार ने मुझे  
उत्तम से निकाल कर और बाकी नहीं हुई उम्मा आप के दुःख  
आने के लिये आप संसार में ले आये। ठीक है, प्रपने मेरी  
स्त्री और नचो के साथ यह उपकार किया कि जिसको वे लोग  
अपनी आत्मा की इस आप से भी आप की क्या आप के दासा दुःख  
की भी खेबा करने पर नहीं और हो सकते। और मैं इस कुछ  
बुद्धी के अनुसार आपके लिये एक भार हो गया। क्योंकि आप  
मेरी परीक्षित रूप जानते हैं। मैं प्रपने बारे में कुछ लिखता  
नहीं चाहता परन्तु औरनी प्रपने आप यह लिखवाना चाहती है  
क्यों कि इसमें यह कहता है कि आप सब समझते हैं और बुद्धी का  
स्थान कहता है कि यह ऐसा नहीं है कि आप के इस परीक्षित



मेरा जानकर प्रतिदुख न हो जाय इस लिये मैरी ओखती चल रही है  
जिससे कि आप मेरा दुख उतना ही समझे जितना कि लिखा है या  
थोड़ा बहुत ज्यादा ।

मैं, आप के पास जाना चाहता हूँ - जो मैं मेरा कुछ हूँ । क्यों  
कि पांच महीने से खान पान नहीं मिला है और महाराजा साहब  
ने बिलकुल मना कर दिया है । जैसी आज्ञा । पत्र आप  
पर रवाना हो जाऊंगा । -

आप का आज्ञाकारी  
गिरधारी शरमा सिद्ध

रानी साहिब बक बिटो और पिता, आप के भरा कर्म को  
में प्रमाण करने हैं -



श्री. | भरतपुर ला ३३ - २ - ४७

श्रीमान

अनन्य श्री पूज्य पाद बाबा महाराज के पुनीत  
पाद पत्रों में रास के कोरिश: पुणाम स्वीकृत हो,  
सर्वतः लुशल ससु / पत्र मिला उलभत इति  
गतः कई दिवसों आपका पत्र न आने की कारण भी  
बड़ी चिन्ता हो रही थी और लाकर यही ख्याल  
होता था कि कहीं बाबा महाराज भी इस जगत् पर  
ले आसन्न हो चुक गये हैं क्या इत्यादि अनेकों  
विचार प्रतिदिन होते रहते थे / श्री श्री रानी सा  
को मैंने समझा दिया है आप जैसा उचित समझे  
श्री हरदेव जी का पत्र इसी पत्र के साथ आया है  
वर आगामी अग्रे दशरी तक आपके समीप  
आ रहे हैं श्री बलविनायक जी के यहां से  
अब आगामी यात्रा की खुशी से पू. स. हो श्री  
१५ दिन का पत्र लिखेंगे क्योंकि अब का पत्र  
उन्हें नहीं मिलेगा / श्री बने बा जी मेनाह जी  
बाबा जी के पत्र की श्री. दिनेश जी ने पुणाम  
कहे हैं / श्री प. मदन लाल जी के पत्र में पुणाम कहा है



मो. श्री रानी लखिम २ नों (मुजा) आये पुष्पा मरुते हैं  
 श्री शिव पुसादनी को वत्र लिख रहा है  
 कृपया छिदा वत्र शीघ्र देते रहिये

शिव (मुजा) कृप

श्री मला मग-चरः

गोविन्द

मित्रेन है कि अमल (मंदक) जाने को  
 इस समय नहीं मिल रहा है मतः  
 एक मिलने जाने में कुछ देर है कि  
 हीकेलु काम से अमल में देखा गया है  
 पादा। चलसकने हो मेरे पास  
 होवे का काम है मेरी आशा।  
 हो अतिशय उता रहे  
 मुझे जो काम जाना में शक  
 का हो करे, न हो

दिन २४ -

एक समाचा मिला कि किसी बंठ वाले ने उन्ही  
 ता. २०-७-४७ को अकारि जाने के दूसरे दिवस  
 जात। काल आगे के इंदगार से शान पर साकिड  
 बूत के डिये में बंठे हुए देखा हो इससे अनुमान  
 लगाया जा सकता है कि वही श्रीमत् अमल-  
 मंदक ही तो नहीं बच्चा के पीदे वहां का (कुछ बला होतो  
 लिखित अमल अचित आता योजिये



# अष्टहर

बिंकोलीकी गिरि	१ गो	१ तो.
बन्दावनकी गिरि	१ गो	१ तो.
रुक्मातीकी गिरि	१ गो	१ तो.
बड़ी हर	१ गो	२ ०१
धोरी हर	१ गो	२ ०१
आंवला	१ गो	२ ०१
प्रकाश भस्म	१ गो	१ ०१
मुक्तानन्द भस्म	१ गो	१ ०१
मंछीके फूल मूरन	१ गो	३ ०१

इन सबोंके स्वरूपमें डाल कर  
सात दिन तक अंगली जो भी के पत्रों  
के स्वरूपमें छोड़े फिर सात दिन तक  
मंछी के पत्रों के स्वरूपमें छोड़े फिर  
अनेक बार बार जो लिखें याँ धाँधल  
सुखाली जो न ।



श्रीः ।  
 हुं ह्रीं श्रिं ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 श्रीमान् मिहिर उदय सिंह ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥



यह लोग क्या करते हैं।  
 पुस्तक १०-२० वर्ष की इन्हीं गृहों आली धोखे  
 नहीं रख मनुष्य का घर काय नहीं है।  
 श्री बरही पुसादजी आपकी निःशुल्क सेवा करना  
 चाहते हैं। आप के भजे हुए जन्म पत्रादि नूतन गणित  
 से गणित के नूतन या पुरातन से लिखिय  
 यहां पुराने पंचांग तो नूतन गणित के हैं नहीं  
 नूतन का दिया इष्ट तो नूतन लिखा जाय  
 शक्तिमय गृहों में ही सख्त दिया जाय नूतन  
 पुरोहित जी से अभी मिलना नहीं हुआ है  
 मिलने में देरी। श्री बरही पुसादजी को  
 शिव पुसादजी के घर आये हैं उन्हें स्त्री का  
 सुख नहीं मिली है अभी से श्री बरही पुसादजी  
 उनका काश के साथ नहीं है।



श्री नन्द लाल जी जो मान से मेरा भी जय शंकर  
 मोर मिनी काँची रिपोट जैसी भाव लिख रहे  
 वेसी ही होति अनेक मास की अगार की तथा  
 (लेख) सहों की मृत पुरुषि मेजवायु हमें भी  
 आये मूल्य से फल पकी सेवा दिगे

श्री पूज पाद वाता महराज के पुनीत पाद चरणों में सदा  
 दास के कोटिशः पुष्पास निवेदन करना।  
 श्री वाक् केशव देव जी को सप्ताह मेधा योग्य लीस  
 जय शंकर पृथक् २ कर देना। और यह भी कहना कि  
 जो तोताराम जी को यह जो दुहुली भेजी है उसका  
 उना अपाति कन्या की जन्म पत्री का संनिवृत्त होना  
 ही भेज सकुंगा। श्री भागी जी को जय शंकर करना।



[illegible]



श्री १८ मधुरा पुसादजी वी. को। डिप्टी डाइरेक्टर  
 (मुआमिल कर दिया है) श्री गिरिराज शरणजी के  
 पत्र में पुणाम लिखने को लिखा है। श्री तिकारी  
 जी के बालक को मोती सुला हो गया था वे  
 उसे लेकर हस्पताल दारिजल है अब  
 कुच्छ शान्ति है, आशा है वे शीघ्र ही अब  
 हस्पताल छोड़ देंगे। शेष कुशल है। मुझे धीरे  
 स्वास्थ्य लाभ हो रहा है, दाक्षिण हाथ की  
 निचट्टी का और दाक्षिण पाद की मद्धका  
 में ही रोग शेष है और इन्हीं में विशेषथा  
 शेष सभी पुङ्गु ठीक हैं। श्री विश्वम्भा  
 सिंह जी सादा साष्टाङ्ग पुणाम निवेदन  
 कर रहे हैं। श्री मासूर मनोहर लाल जी  
 गुप्त के पुणाम स्वीकृत हैं। श्री दुर्गादल जी  
 यहां आये हुए हैं वे पुणाम कहते थे।  
 जन्म पत्र प्रायः पूर्ण साही रोग्य है श्री ज्यो. जीने  
 लिखा दिया है २-४ कागजों के न मिलने से कुछ शेष  
 कल कागज में कागज मिलने से १-२ दिन पूर्ण हो-

जायगा श्री के. के. आनन्द के पते पर भेज दोगे  
 कल व्यास पूर्णिमा है अतः उसके उपलक्ष्य  
 श्री नाथान्दि गुप्तनर्थ गरापति पीठनर  
 सिद्धो घं बटुक नर्थ पदपुगं दूती क्रम  
 वीरान्न द्वेष्ट चतुर्व्व षाष्टि नवव  
 श्री मन्मालिनि मंत्रराज सहित वन्दे  
 आप सहित समस्त गुरु मण्डल को को  
 ०००

विद्या परां कातो चिदम्ब (मम्ब के चि  
 आनन्द मेव कतिचित्कातो चिच्च मान  
 त्वां विश्व मातु रूपो वयमात्मनाम  
 साक्षादपार करुणा गुरुमूर्ति रेव/

श्री १८ बलजिन्नाथ जी को साधा  
 लप्रेम जय शङ्कर कहें।

बारंवा को टि. शः पुणाम है  
 कुशल पत्र दें। गोविन्द।



श्री: | वैकुण्ठ-भरतपुर  
७-७-६०

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतंत्र बाबा महाराज  
ज पुनीत पादार विन्दों में दासानु-  
दास गोविन्द के कोटिशः पुणाम  
स्वीकृत हों। सर्वतिः कुशलम  
इन दिनों कोई कुशल वत्त नहीं  
आया सो दे। श्रीजनसा. आज  
जातः यहां आगये हैं। श्री मनोहरलाल  
जी नगर वालों का तबादला बूँदी  
है निडु, स्कूल में होगया है, बेतन में  
भी बूँदी होजायगी। इनके श्रीचरणों  
में पुणाम स्वीकृत हों। सुना है। के-

7/7/60  
श्रीगुरुदेव  
श्रीगुरुदेव  
श्रीगुरुदेव  
भजनो नमो कृत्यं पता:-  
30

अनन्त श्रीगुरुदेव  
(२/५/६०) १०००००००  
०/० १/५/६०  
अनन्त श्रीगुरुदेव



अनन्त श्रीगुरुदेव  
०/० १/५/६०



भक्तान् प्रभु ॥ ३ ॥

चरणों के हाव

२

प्रसाद लीकल हो के शरणा के

ता १० मर बुझना के दर निज

जोने की निचार सचता के ज्यो

तो - प्राप ही जने तपपति-प्राप

की दया के नीचे है - प्राप - प्रपनी

बुझलता की पल - प्रनरप

क (निबेने की पूरा

जोरी श्री मयप

नी है हवा

मन हवा मलिन

कल अरु

निबेने



अन्तर्देशीय पत्र

6/9/58

इस पत्र के अन्दर कुछ न लिखिये

17 रजपुल ले

अबु फा

वर्ष ॥ श्रीजी ॥



१० श्री. जैपालकावडा ९/० चपलकांशजिनि  
योरिंगवठ से देशनिराड मांडूप  
पोस्ट मांडूप बम्बई नं. ४०  
Bombay

पहला मोड़

तीसरा मोड़

दूसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-



परम पूज्य महाराज - पादरत्नोपदेववादिदेव  
॥ श्री जी ॥

चरणों में कोटि २ प्रणाम स्वीकार है

प्राज हो ॥ श्री जी ॥ - आप का हुपा पंच मिला

मार्गना है कि इसी प्रकार सदैव लु शास्त्रता

रहने की हुपा बनाये रखें

जबसे धर से चला हूँ तब से इस समय  
तक मेरे में दर्द मरोड़ - पोर - पाँव जाता  
है दवाई ले रहा हूँ कभी कम कभी ज्यादा।  
इसी प्रकार चलती रहती है ठीक हो जावेगी  
पर कभी कामो गह इसी कारण - पहमदा  
बाद नहीं गया म ह से परसरा पच  
शुह हो जाते हैं विचार ऐसा है कि

तबपति ही नही हो पाई तो धोपि  
मरतपुर चला जाऊंगा तबपति ही  
उने से दिखिचार करूंगा।

- योग तो भागवत आप ही जाने।

कि बम्बई कब बुलाकर दर्शन दौ  
बम्बई कितने समय

हुपा कर जहर लिखने की कद

- प्राज ही - आप के हुपा पंच के साथ श्री  
पंडितजी का भी हुपा पंच मिला है उन्हें  
श्री मरतपुर पंच लिख रहा हूँ

वहाँ से सभी मंडली, श्री जी ॥ चरणों

में प्रणाम - प्रज करती है दयालु दया

सागर हुपा कर लु शास्त्रता की पंच  
इसी प्रकार लिखने की हुपा पंच



करते रहें पाहो योग्य सेवा  
हो तो लखिये

श्री जयपालजी को तमारा  
अशंकर करे हो जिंदगी  
करके जमा चरता हुये पुरखे का  
करता हुं ब्रह्मांड पंचोत्तर  
शास्त्र ही देकर ब्रह्मा बनने  
रखे / पापकाही  
जेन

# अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रक्खिये



सेवामें परम-नन्दरणीय ॥ श्री जी ॥

१० श्री जयपाल छावरा

अलफाइनियरिंग व बम्स  
स्टेशन रोड मांडूय  
पोस्ट मांडूय बम्बई ४०  
Bombay No 1

11/9/58  
भेजने वाले का नाम और पता :-  
N.C. Jain  
१४ गोतीचन्दलू मांडूय  
मांडूय मांडूय  
नवान मांडूय-४ मांडूय





है महा सब को अपना ओ शंकर बने देना —

-प्राप नब्ब तन्नु हरेंगे -

श्री. गुलाब कुनीजी - तथा श्री किल्लूर कुनीजी

के मिला सब प्रकार - आपकी कृपा है - प्रामन्द हरि  
मत होगई जो मिलने पर मिलित रूप के वला कंग  
आपकी मोर है - आप तनिवुपी चिन्ता नहीं  
है वह सब के दे कमी के कपा छोड़ दो सब

आपके - प्रहोर्षा है - प्रामन्द है जोनेगा - आप सब  
ही तनिवु चिन्ता नहीं है श्री. जी का प्रवर्धित रंजित

बालके - प्रहो तन्ना तथा कण्डितानी श्री के तन्ना सब  
वर्णन ध्यान रत्न का - उपचा (गुण) देवो नुद्ध

तन्नी के लिये कपड़ों की जरूरत हो तो भिजना दु  
मिहोन्ध निरुद्ध देना - दे के हो आप हो - प्रहो

हृदय के वला तन्ना दे देना है - तन्ना प ही वरुद्ध  
गा - वन हृदय - प्रहो की माग लेना दु - प्रहो

दे के हो तन्ना दे देना है - तन्ना प ही वरुद्ध



1117/1 2 18/15 13/22 - 120 10/14/10  
 12/11 13/12 14/13 15/14 16/15 17/16 18/17 19/18 20/19 21/20 22/21 23/22 24/23 25/24 26/25 27/26 28/27 29/28 30/29 31/30 32/31 33/32 34/33 35/34 36/35 37/36 38/37 39/38 40/39 41/40 42/41 43/42 44/43 45/44 46/45 47/46 48/47 49/48 50/49 51/50 52/51 53/52 54/53 55/54 56/55 57/56 58/57 59/58 60/59 61/60 62/61 63/62 64/63 65/64 66/65 67/66 68/67 69/68 70/69 71/70 72/71 73/72 74/73 75/74 76/75 77/76 78/77 79/78 80/79 81/80 82/81 83/82 84/83 85/84 86/85 87/86 88/87 89/88 90/89 91/90 92/91 93/92 94/93 95/94 96/95 97/96 98/97 99/98 100/99 101/100 102/101 103/102 104/103 105/104 106/105 107/106 108/107 109/108 110/109 111/110 112/111 113/112 114/113 115/114 116/115 117/116 118/117 119/118 120/119 121/120 122/121 123/122 124/123 125/124 126/125 127/126 128/127 129/128 130/129 131/130 132/131 133/132 134/133 135/134 136/135 137/136 138/137 139/138 140/139 141/140 142/141 143/142 144/143 145/144 146/145 147/146 148/147 149/148 150/149 151/150 152/151 153/152 154/153 155/154 156/155 157/156 158/157 159/158 160/159 161/160 162/161 163/162 164/163 165/164 166/165 167/166 168/167 169/168 170/169 171/170 172/171 173/172 174/173 175/174 176/175 177/176 178/177 179/178 180/179 181/180 182/181 183/182 184/183 185/184 186/185 187/186 188/187 189/188 190/189 191/190 192/191 193/192 194/193 195/194 196/195 197/196 198/197 199/198 200/199 201/200 202/201 203/202 204/203 205/204 206/205 207/206 208/207 209/208 210/209 211/210 212/211 213/212 214/213 215/214 216/215 217/216 218/217 219/218 220/219 221/220 222/221 223/222 224/223 225/224 226/225 227/226 228/227 229/228 230/229 231/230 232/231 233/232 234/233 235/234 236/235 237/236 238/237 239/238 240/239 241/240 242/241 243/242 244/243 245/244 246/245 247/246 248/247 249/248 250/249 251/250 252/251 253/252 254/253 255/254 256/255 257/256 258/257 259/258 260/259 261/260 262/261 263/262 264/263 265/264 266/265 267/266 268/267 269/268 270/269 271/270 272/271 273/272 274/273 275/274 276/275 277/276 278/277 279/278 280/279 281/280 282/281 283/282 284/283 285/284 286/285 287/286 288/287 289/288 290/289 291/290 292/291 293/292 294/293 295/294 296/295 297/296 298/297 299/298 300/299 301/300 302/301 303/302 304/303 305/304 306/305 307/306 308/307 309/308 310/309 311/310 312/311 313/312 314/313 315/314 316/315 317/316 318/317 319/318 320/319 321/320 322/321 323/322 324/323 325/324 326/325 327/326 328/327 329/328 330/329 331/330 332/331 333/332 334/333 335/334 336/335 337/336 338/337 339/338 340/339 341/340 342/341 343/342 344/343 345/344 346/345 347/346 348/347 349/348 350/349 351/350 352/351 353/352 354/353 355/354 356/355 357/356 358/357 359/358 360/359 361/360 362/361 363/362 364/363 365/364 366/365 367/366 368/367 369/368 370/369 371/370 372/371 373/372 374/373 375/374 376/375 377/376 378/377 379/378 380/379 381/380 382/381 383/382 384/383 385/384 386/385 387/386 388/387 389/388 390/389 391/390 392/391 393/392 394/393 395/394 396/395 397/396 398/397 399/398 400/399 401/400 402/401 403/402 404/403 405/404 406/405 407/406 408/407 409/408 410/409 411/410 412/411 413/412 414/413 415/414 416/415 417/416 418/417 419/418 420/419 421/420 422/421 423/422 424/423 425/424 426/425 427/426 428/427 429/428 430/429 431/430 432/431 433/432 434/433 435/434 436/435 437/436 438/437 439/438 440/439 441/440 442/441 443/442 444/443 445/444 446/445 447/446 448/447 449/448 450/449 451/450 452/451 453/452 454/453 455/454 456/455 457/456 458/457 459/458 460/459 461/460 462/461 463/462 464/463 465/464 466/465 467/466 468/467 469/468 470/469 471/470 472/471 473/472 474/473 475/474 476/475 477/476 478/477 479/478 480/479 481/480 482/481 483/482 484/483 485/484 486/485 487/486 488/487 489/488 490/489 491/490 492/491 493/492 494/493 495/494 496/495 497/496 498/497 499/498 500/499 501/500 502/501 503/502 504/503 505/504 506/505 507/506 508/507 509/508 510/509 511/510 512/511 513/512 514/513 515/514 516/515 517/516 518/517 519/518 520/519 521/520 522/521 523/522 524/523 525/524 526/525 527/526 528/527 529/528 530/529 531/530 532/531 533/532 534/533 535/534 536/535 537/536 538/537 539/538 540/539 541/540 542/541 543/542 544/543 545/544 546/545 547/546 548/547 549/548 550/549 551/550 552/551 553/552 554/553 555/554 556/555 557/556 558/557 559/558 560/559 561/560 562/561 563/562 564/563 565/564 566/565 567/566 568/567 569/568 570/569 571/570 572/571 573/572 574/573 575/574 576/575 577/576 578/577 579/578 580/579 581/580 582/581 583/582 584/583 585/584 586/585 587/586 588/587 589/588 590/589 591/590 592/591 593/592 594/593 595/594 596/595 597/596 598/597 599/598 600/599 601/600 602/601 603/602 604/603 605/604 606/605 607/606 608/607 609/608 610/609 611/610 612/611 613/612 614/613 615/614 616/615 617/616 618/617 619/618 620/619 621/620 622/621 623/622 624/623 625/624 626/625 627/626 628/627 629/628 630/629 631/630 632/631 633/632 634/633 635/634 636/635 637/636 638/637 639/638 640/639 641/640 642/641 643/642 644/643 645/644 646/645 647/646 648/647 649/648 650/649 651/650 652/651 653/652 654/653 655/654 656/655 657/656 658/657 659/658 660/659 661/660 662/661 663/662 664/663 665/664 666/665 667/666 668/667 669/668 670/669 671/670 672/671 673/672 674/673 675/674 676/675 677/676 678/677 679/678 680/679 681/680 682/681 683/682 684/683 685/684 686/685 687/686 688/687 689/688 690/689 691/690 692/691 693/692 694/693 695/694 696/695 697/696 698/697 699/698 700/699 701/700 702/701 703/702 704/703 705/704 706/705 707/706 708/707 709/708 710/709 711/710 712/711 713/712 714/713 715/714 716/715 717/716 718/717 719/718 720/719 721/720 722/721 723/722 724/723 725/724 726/725 727/726 728/727 729/728 730/729 731/730 732/731 733/732 734/733 735/734 736/735 737/736 738/737 739/738 740/739 741/740 742/741 743/742 744/743 745/744 746/745 747/746 748/747 749/748 750/749 751/750 752/751 753/752 754/753 755/754 756/755 757/756 758/757 759/758 760/759 761/760 762/761 763/762 764/763 765/764 766/765 767/766 768/767 769/768 770/769 771/770 772/771 773/772 774/773 775/774 776/775 777/776 778/777 779/778 780/779 781/780 782/781 783/782 784/783 785/784 786/785 787/786 788/787 789/788 790/789 791/790 792/791 793/792 794/793 795/794 796/795 797/796 798/797 799/798 800/799 801/800 802/801 803/802 804/803 805/804 806/805 807/806 808/807 809/808 810/809 811/810 812/811 813/812 814/813 815/814 816/815 817/816 818/817 819/818 820/819 821/820 822/821 823/822 824/823 825/824 826/825 827/826 828/827 829/828 830/829 831/830 832/831 833/832 834/833 835/834 836/835 837/836 838/837 839/838 840/839 841/840 842/841 843/842 844/843 845/844 846/845 847/846 848/847 849/848 850/849 851/850 852/851 853/852 854/853 855/854 856/855 857/856 858/857 859/858 860/859 861/860 862/861 863/862 864/863 865/864 866/865 867/866 868/867 869/868 870/869 871/870 872/871 873/872 874/873 875/874 876/875 877/876 878/877 879/878 880/879 881/880 882/881 883/882 884/883 885/884 886/885 887/886 888/887 889/888 890/889 891/890 892/891 893/892 894/893 895/894 896/895 897/896 898/897 899/898 900/899 901/900 902/901 903/902 904/903 905/904 906/905 907/906 908/907 909/908 910/909 911/910 912/911 913/912 914/913 915/914 916/915 917/916 918/917 919/918 920/919 921/920 922/921 923/922 924/923 925/924 926/925 927/926 928/927 929/928 930/929 931/930 932/931 933/932 934/933 935/934 936/935 937/936 938/937 939/938 940/939 941/940 942/941 943/942 944/943 945/944 946/945 947/946 948/947 949/948 950/949 951/950 952/951 953/952 954/953 955/954 956/955 957/956 958/957 959/958 960/959 961/960 962/961 963/962 964/963 965/964 966/965 967/966 968/967 969/968 970/969 971/970 972/971 973/972 974/973 975/974 976/975 977/976 978/977 979/978 980/979 981/980 982/981 983/982 984/983 985/984 986/985 987/986 988/987 989/988 990/989 991/990 992/991 993/992 994/993 995/994 996/995 997/996 998/997 999/998 1000/999 1001/1000 1002/1001 1003/1002 1004/1003 1005/1004 1006/1005 1007/1006 1008/1007 1009/1008 1010/1009 1011/1010 1012/1011 1013/1012 1014/1013 1015/1014 1016/1015 1017/1016 1018/1017 1019/1018 1020/1019 1021/1020 1022/1021 1023/1022 1024/1023 1025/1024 1026/1025 1027/1026 1028/1027 1029/1028 1030/1029 1031/1030 1032/1031 1033/1032 1034/1033 1035/1034 1036/1035 1037/1036 1038/1037 1039/1038 1040/1039 1041/1040 1042/1041 1043/1042 1044/1043 1045/1044 1046/1045 1047/1046 1048/1047 1049/1048 1050/1049 1051/1050 1052/1051 1053/1052 1054/1053 1055/1054 1056/1055 1057/1056 1058/1057 1059/1058 1060/1059 1061/1060 1062/1061 1063/1062 1064/1063 1065/1064 1066/1065 1067/1066 1068/1067 1069/1068 1070/1069 1071/1070 1072/1071 1073/1072 1074/1073 1075/1074 1076/1075 1077/1076 1078/1077 1079/1078 1080/1079 1081/1080 1082/1081 1083/1082 1084/1083 1085/1084 1086/1085 1087/1086 1088/1087 1089/1088 1090/1089 1091/1090 1092/1091 1093/1092 1094/1093 1095/1094 1096/1095 1097/1096 1098/1097 1099/1098 1100/1099 1101/1100 1102/1101 1103/1102 1104/1103 1105/1104 1106/1105 1107/1106 1108/1107 1109/1108 1110/1109 1111/1110 1112/1111 1113/1112 1114/1113 1115/1114 1116/1115 1117/1116 1118/1117 1119/1118 1120/1119 1121/1120 1122/1121 1123/1122 1124/1123 1125/1124 1126/1125 1127/1126 1128/1127 1129/1128 1130/1129 1131/1130 1132/1131 1133/1132 1134/1133 1135/1134 1136/1135 1137/1136 1138/1137 1139/1138 1140/1139 1141/1140 1142/1141 1143/1142 1144/1143 1145/1144 1146/1145 1147/1146 1148/1147 1149/1148 1150/1149 1151/1150 1152/1151 1153/1152 1154/1153 1155/1154 1156/1155 1157/1156 1158/1157 1159/1158 1160/1159 1161/1160 1162/1161 1163/1162 1164/1163 1165/1164 1166/1165 1167/1166 1168/1167 1169/1168 1170/1169 1171/1170 1172/1171 1173/1172 1174/1173 1175/1174 1176/1175 1177/1176 1178/1177 1179/1178 1180/1179 1181/1180 1182/1181 1183/1182 1184/1183 1185/1184 1186/1185 1187/1186 1188/1187 1189/1188 1190/1189 1191/1190 1192/1191 1193/1192 1194/1193 1195/1194 1196/1195 1197/1196 1198/1197 1199/1198 1200/1199 1201/1200 1202/1201 1203/1202 1204/1203 1205/1204 1206/1205 1207/1206 1208/1207 1209/1208 1210/1209 1211/1210 1212/1211 1213/1212 1214/1213 1215/1214 1216/1215 1217/1216 1218/1217 1219/1218 1220/1219 1221/1220 1222/1221 1223/1222 1224/1223 1225/1224 1226/1225 1227/1226 1228/1227 1229/1228 1230/1229 1231/1230 1232/1231 1233/1232 1234/1233 1235/1234 1236/1235 1237/1236 1238/1237 1239/1238 1240/1239 1241/1240 1242/1241 1243/1242 1244/1243 1245/1244 1246/1245 1247/1246 1248/1247 1249/1248 1250/1249 1251/1250 1252/1251 1253/1252 1254/1253 1255/1254 1256/1255 1257/1256 1258/1257 1259/1258 1260/1259 1261/1260 1262/1261 1263/1262 1264/1263 1265/1264 1266/1265 1267/1266 1268/1267 1269/1268 1270/1269 1271/1270 1272/1271 1273/1272 1274/1273 1275/1274 1276/1275 1277/1276 1278/1277 1279/1278 1280/1279 1281/1280 1282/1281 1283/1282 1284/1283 1285/1284 1286/1285 1287/1286 1288/1287 1289/1288 1290/1289 1291/1290 1292/1291 1293/1292 1294/1293 1295/1294 1296/1295 1297/1296 1298/1297 1299/1298 1300/1299 1301/1300 1302/1301 1303/1302 1304/1303 1305/1304 1306/1305 1307/1306 1308/1307 1309/1308 1310/1309 1311/1310 1312/1311 1313/1312 1314/1313 1315/1314 1316/1315 1317/1316 1318/1317 1319/1318 1320/1319 1321/1320 1322/1321 1323/1322 1324/1323 1325/1324 1326/1325 1327/1326 1328/1327 1329/1328 1330/1329 1331/1330 1332/1331 1333/1332 1334/1333 1335/1334 1336/1335 1337/1336 1338/1337 1339/1338 1340/1339 1341/1340 1342/1341 1343/1342 1344/1343 1345/1344 1346/1345 1347/1346 1348/1347 1349/1348 1350/1349 1351/1350 1352/1351 1353/1352 1354/1353 1355/1354 1356/1355 1357/1356 1358/1357 1359/1358 1360/1359 1361/1360 1362/1361 1363/1362 1364/1363 1365/1364 1366/1365 1367/1366 1368/1367 1369/1368 1370/1369 1371/1370 1372/1371 1373/1372 1374/1373 1375/1374 1376/1375 1377/1376 1378/1377 1379/1378 1380/1379 1381/1380 1382/1381 1383/1382 1384/1383 1385/1384 1386/1385 1387/1386 1388/1387 1389/1388 1390/1389 1391/1390 1392/1391 1393/1392 1394/1393 1395/1394 1396/1395 1397/1396 1398/1397 1399/1398 1400/1399 1401/1400 1402/1401 1403/1402 1404/1403 1405/1404 1406/1405 1407/1406 1408/1407 1409/1408 1410/1409 1411/1410 1412/1411 1413/1412 1414/1413 1415/1414 1416/1415 1417/1416 1418/1417 1419/1418 1420/1419 1421/1420 1422/1421 1423/1422 1424/1423 1425/1424 1426/1425 1427/1426 1428/1427 1429/1428 1430/1429 1431/1430 1432/1431 1433/1432 1434/1433 1435/1434 1436/1435 1437/1436 1438/1437 1439/1438 1440/1439 1441/1440 1442/1441 1443/1442 1444/1443 1445/1444 1446/1445 1447/1446 1448/1447 1449/1448 1450/1449 1451/1450 1452/1451 1453/1452 1454/1453 1455/1454 1456/1455 1457/1456 1458/1457



श्री गुरुभ्यो नमः

रूरतसिरी  
ता. २६-८-५८

जीभान से ६ साठ

— सादर एवं सप्रेम शुभकामनाओं सह.

स्वायत्त तथा श्री. वावा महाराज सातन्द पूर्वक  
पहुँच गये होंगे. मगर कोई कुशलतापत्र तारफ  
तक भारतपुर नहीं मिला. मैं सूरत आ गया हूँ  
हुआ कर श्री. पूज्य वावा महाराज तथा अपनी  
कुशलता का पत्र लिखने की हुपा करें. अभी  
पूज्यनीय, वावा महाराज के घरों में मेरी कोटि  
कोहि प्रणाम निवेदन करे हूँ.

भवदीया

निरंजन लाल जैन  
९० मोतीबाई लक्ष्मणबाई  
जवेरी.

कांजीनी मैदान कंठ  
मैशन सेमना.

सूरत



# अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



To

Shri. Jai-pal Chhaba

of Alfai Engineering Works

Station Road.

Bhandup

(Bombay No. 40)

पहला मोड़

प्रेमने वाले का नाम और पता :-

From. Nirvan in Lal Jain

90 Moti Bhagat Lal Road

Javeri

Kajence Market Kanoo,

Mention Room No. 4,

Surat City.

तीसरा मोड़

Sawmi-ji

Tomrson

Recd.









अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्तर कुछ न लिखें

Handwritten text in Devanagari script, including a signature and address details.

Handwritten text in Devanagari script, continuing the letter or message.



July

17

7-72 को प्रमाणित किया गया।

कुहागा में मलामा जा रहा है

॥ प्रसक्तता है और खद नानवातका

कि मैं कुछ दिनों से योग में

अवस्थाने कुम्भीय हार कलाया है वि

के तैरपर हृदयके डियरके बास को बासे

कोयल को रक्त जलवाला जो दीजिये। बाद में

यानेग होजाये जीसने 3-4 गज आदिक

हचुंवाहे आच्छेरांने वताया काहे कि आपनी

नवमे पत्रे/ नवध्यातु भाष्य का विवरण एवं

जब किसी भी क्षण  
योग्य साधन मिले

कंचित् मान्

दीतनाहि

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan,

गंगादेवीकी गंगा  
गंगा नदी पश्चिम में

पूरी कर

दिनांक

कालिका

केवल एक

राज जिसको २२ भा वर्ष चल रहा है श्री गुरुजी

जिसके जग समग्रमे विशेष व्यक्तित्व की

विष्णुकाय/ विष्णुकाय अपरमे लच्छ वच्छे

मोहो बुद्ध भोज्यानुसार दिवा गदा आरमे

गुरुजीने नामचा यज्ञोपवीत सत्कार १२ जेव्हा दिला

न वर्षे तद्वत् अथ जीजप संख्याया वन्द्य दि चेलत

पुष्पपी. थडेई. डेडीरुमे हुन्ना अतः कच्छे कोव  
दे दखताही. पुष्पपी. थडेई. डेडीरुमे हुन्ना अतः कच्छे कोव

गोडा परीक्षा... द्वाही धरम... पुनः को

गिरि। अब सब के ली केल पुनः मे हाने पुनः

गडिमिला मतः

Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri



इस पत्र के भीतर लेखिए NO ENCLOSURES ALLOWED



प्रातः हजरीपु ~~सि~~

अनंत श्री 'श्रीजी' के सावर पुण्य पादों में  
वासानुदास के सावरों का प्रणाम ज्ञात है।

आपके जाने के बाद अभी आपके समाचार भीपुर्कजी  
के पत्र द्वारा प्राप्त हुए, पत्र पढ़कर खुशी हुई कि आप  
का स्वास्थ्य बड़ा ठीक है। श्री रत्न लाल जी का भी कोई  
कुशलता का पत्र भी नहीं आया, इससे चिन्ता बनी  
हुई थी। लेकिन अब आपके कुशल समाचार आने से  
सभी प्रसन्न हैं। जयपुर से भी दशरथ जी का पत्र आया  
आपके प्रणाम लिए। तब से पत्र साफ में भी भेजे  
थे। उनके लिए हमें बहुत आनंद हो रहा है।

पुनः श्री लालजी एवं पुत्रों की ओर से आपका आभार प्रणाम  
ज्ञात है। श्री बाला साहेबजी, उनकी बहूजी, श्री धर्मेश्वरजी  
आदि सभी वर आपका अभिवादन करते हैं। श्री हरणीधरजी  
जब रात्री को मयपुर आए हैं आपका अभिवादन करते हैं।

श्री पं. रमेशचंद्रजी एवं उनके परिवार वालों को भेंट तथा  
बहा के सभी प्रेमी जनों का अभिवादन ज्ञात है।

शेष सभी आपके आशीर्वाद से अकुशल हैं।  
पुनः श्री दशरथजी की ओर से वासानुदास  
आपकी ओर प्रणाम  
आपकी ओर प्रणाम  
आपकी ओर प्रणाम



श्री दुर्गादेव जी के पत्र से माधवम हुआ है कि श्री सिंघाराम जी  
कृतकृत। जगदीश्वरी

दासाधुमास  
३/५/७०  
३/५/७०



श्री जगज्जननपै. नमः

आदरणीय भ्रातृवर श्री गोविन्द जी

पत्रमिला दो लक्षों में भी

जब कभी सत्तप हुआ लिखदुंगा

श्री पुण्यपाद जी आपके सौभाग्य से आपके

यहां है इसकी महान् प्रसन्नता है

इस अकिंचन को भी कृतार्थ करेंगे ऐसी

भावना लिये हैं

हां तो एक आपसे

निवेदन कर रहा हूं कि श्री आध्यात्म का

सम्पादन अवश्य करने का मार्ग निकालें

क्यों कि इससे हमको श्री पुण्यपाद जी के

द्वारा प्रसाद रूप से जो कभी कभी आध्यात्मिक

उपदेश मिलते थे उनसे वंचित हो जायेंगे

बहु मिलते रहने चाहिए। इसके सम्बन्ध में

आस्था है कृपया अवगत करायें

आ विंशती का शान्ति छपगछों तो

उसकी प्रति और साधालोक की प्रति

और वेदों के प्रति

जो हमको अपने विषय में प्रसिद्ध है-



गीता का अनुशीलन भी करता रहता हूँ  
तथा श्रीमद्भागवत का भी

योग दर्शन का भी परल्लभ इस सभके देखने  
से कंड़ी कंड़ी शक्ती उलझने लगी  
(उठ खड़ी होती है) (अर्थात् प्राप्ति में)  
होने लगती है। पूर्व लक्ष्य के प्रति वेशक  
आल विलास ही (सुगम प्रकाश आलता है)  
इसकी भी समझने के लिये किसी प्राणिम  
ग्रन्थ देखने की आवश्यकता है वरुन कौन  
से ग्रन्थ है। कृपया गुरु जी से प्रार्थना  
पूर्वक मेरा निवेदन करना कि कौन कौन से  
ग्रन्थ देखने चाहिये। मेगासुद्धं॥ शैव दर्शन  
भी एक बार श्री गुरु जी कहते थे वरुन कठिन  
होगा कदाचिदि टीका पुस्तक कहीं मिलेगी  
अथवा और जो श्री जी की आज्ञा हो देखें  
श्री जी ने मुझे शक्ति स्वरूपी के लिये भी कहा था  
वरुन मैंने मंगाली है तीलक गीता भी कुछ  
स्वामी सद्गतीन्ध की पुस्तक भी उनसे भी  
अलौकिकता देखी जो अपने पुष्प चरणों  
के उपदेशों से ही मिलनी जुलाने है  
आज कल में जैसे तो रोगियों के कालावरण में  
जिस जल में आरुहण कर भी पुष्प चरणों पे दृष्टा  
उला प्राण शक्ति पर संज्ञा है यो न समझें



श्री गुरुचरणकमलमो नमः

परम पुण्य श्री गुरुजी

सेवक की कोटिशः पुष्पाप

आज पत्र श्री गोविन्द जी का मिला जिसमें  
आपकी उपास्थिति का नि पता चला  
महान् प्रसन्नता है कि आपने अपने  
आदेश से ही ऐसा लिखने को कहा होगा  
नहीं तो आप अपनी उपास्थिति के  
कोरे में ~~स्व~~ संकेत करने पर भी प्रतिबन्ध  
लगाये रखते हैं मैं दन्दावन जाते आपके  
दर्शनों का लाभ पायुं नहुँ और प्रार्थना भी  
कर गया था कि इस वर्ष अवश्य यहाँ  
पध्याकर कुछ दिनों सेवा का मौका देंगे  
सो आशा लगाये हूँ अवश्य इस अर्द्धिच  
नको भी कृतार्थ करियेगा  
महान् हर्ष होगा  
आपका अनेक सेवक  
वैष्णव चानन श्री







BHARATPUR

Ref. No. \_\_\_\_\_ Date \_\_\_\_\_

श्रीमान्

अनन्त श्री पूज्य पादु बाबा महाराज के पुनीत पाद पत्रों में  
 दास की कोटिशः पुणाम स्वीकृत हो एक लिफाफा 3-4 दिन पूर्व  
 सेवा में भेज चुका हूँ जिसमें श्री जैराम जी का पत्र भी था चेंदुच लिखियेगा  
 आज श्री कस्तूरी लाल जी का पत्र आया है साक्ष में भेज रहा हूँ श्री शिव प्रसाद  
 जी का पत्र भी भेज रहा हूँ श्री जै राम जी तथा शिव प्रसाद जी दोनों ने रुपये  
 मिल गये हैं श्री राधा 5 इलाक के अपने पुत्र <sup>को</sup> पुत्र बना हुआ मानतीं। अरे की  
 धन का विचार जल्दी से मलती कर रहा हूँ आप का कलतक पधारने का  
 विचार है श्री बाबू जी श्री भावी जी नि. जगदीश हरी सावित्री  
 प्रभृति सब को जय शंकर श्री हरदेव जी ने पहलें में लिखी पुरानियों  
 का उत्तर नहीं दिया जैसी रजिन दिनों इनका पत्र आया है (जो हमें नहीं  
 मिला) उन दिनों लहरी को हमें धुई का धान दिखी ईसाई ने ठाक  
 का कार्य किया है लहरी से मुद्रा पाया भी कि मुझे पता नहीं चला  
 श्री पुरोहित जी ने 4-6-90 दिन बाद देने को कहा है ता. 8 को  
 बह गजी (पु) जा रहे हैं वहां से आकर भीम नई हूँ अच्छा हो  
 दि श्री हरदेव जी एक पत्र भेजे अथवा उनको अपनी अन्धा-  
 नयनता पुकर कहते हुए लिखें आज एक पत्र जगजीवन दास  
 (पुत्र का भी) भेज रहा हूँ श्री राधा देने को लिखते हैं/४५



پیر یہ سیدھی

نہتے۔ میں اپنے ہاتھ کافی دن پہلے دیا تھا ایک آدمی کی

تلاش کے لئے۔ اور میں کوئی خاص خط بھی نہیں

مانگے تھے۔ پھر فتور کے لئے کیا تھا کہ کوئی خط نہیں ہے۔ بول ایک

تھا سو میں نے لیرہ دیا۔ <sup>تہہ بہ تہہ</sup> شہر میں اس کے لئے ملتی تھی۔ اب

اس کے لئے لیرہ دیا ہے۔ اب کوئی جی چھوٹی لیرہ یہ ترسینی

نہتے لیرہ مل جائے کہ اس کے لئے۔ اگر کوئی آدمی دیکھ لے

یا اس کے لئے کوئی۔ اس کے لئے کوئی ضرور ہوا ہے۔

اس کے لئے دو۔ اور اگر آئے۔ اور پھر آئے۔ تو اس کے

اس لئے لیرہ دے دیں =

لال سنگہ صدف

میں نے سیکری۔

میں نے کوئی دھوم نہ

رکھیں۔

میں نے ان کے لئے ہم نے دیا





398/47

سید خیر نواز

پری. بی. بی. (سید)

نیل

س 6 مرقا داس

دری در شام

موتار



बलशता प्रम मंदमायतादेव । योद ज्ञानस्थानानरु गी ।

बाधा प्रत्यादि तत्र श्रीनाए प्रविष्टेन

पवित्री का व्यनि मूवंडिप्रिष्ट

प्रमो ! यथा यज्ञवृष्याऽतिहिनैर मधु-

मधुतत्रिज्यः पुन शुद्ध बोधते । यं ज्ञः-

तप्येवाधुनाऽपि लि हवन्त्येव वचनः-

प्रविधत्तयेनो रताणीय ।

वसुतातको हैं वचनसमी

फिर केसे हें तुम श्रीगोमी प्रां

हम केसे हैं नाए तुमहो नही

फिर कबेलां नांयों उलधसगी प्रां

विमोधक

श्रीगोमी जंरु कोरु

श्रीमत्का दासा

नन्दकिशोर वै

उत्तीलागुली जिंकांगड़ा



श्री १०८  
 श्री १०८  
 श्री १०८



New Ball No 14  
 Ring Road

539 8th Nishad Road

Raj Kumar Hign...

90  
 10/11/30



INLAND LETTER

जवालागुली  
 श्री प्रमातनीय परमादानीय पदपूज्य  
 श्री आचार्य चरणेश दास मन्दिरीसोट  
 कृता नतय सप्रसन्नमोः । प्रभु  
 तत्रभवत् भवता प्रनुयी हण भावत्कभी हेच ।  
 त्रिस काधिगतं भवत्कर प्रभुजाडितं  
 दलप्र । श्रीयुज्य प. गीविंदश्रीलिंग पत्रादि  
 वभावत्क अदन्तं जायेत । न जनि  
 कस्मात्करणात् - विस्मृतिपथं नीतोऽयं  
 जमः । प्राप्रकीना - एव काचन तुल्यः - सन्ति  
 शीतमेव + पटं मया तु - तत्पारि हारण्यमेव  
 श्रीचरणवत्तवं कृतम् । तदीयेयं प्रार्थ  
 ना (श्रीगुलसीदासपूज्य) ॥ अतिं प्रपच्छ  
 रघुपंगव निभितं मे - का प्रादि दावरीहत्त  
 कुरु प्रानसंच ॥ न जनि कयं श्रीभद्रि  
 ॥ सगृहव प्रपन्नाय तनास्तीति नयाचैता  
 अभयं सर्वभूतानां ददाम्यतद्व्रतं मया  
 इति विस्तृतम् । कीदृशं स्थाप्यं वर्ति  
 प्रतीकत यत् - प्रावत्की







॥ भद्रपूर ॥

॥ सेनामै ॥

॥ श्रीगुरुजी ॥

॥ कोठी गुरु जार नाम ॥

॥ ॐ ॥

॥ ग: ११ - २ - ४६ - ॥

श्रीमान प्रभु बाहू श्रीवाना महाराज के ।

नमस्कार कर्मों में मेरी नदोर २ इनकोर माहम

हों । आपमें महीं पर मन गती सुसी है । आपकी गती सुसी श्रीपर माहम  
से प्रेन सुभ नदोर है । प्रेन पर आपका मीठा पदकर कुछ गान्ही ।  
मीठा आपों लीतों नदोर आपकी सेनामै नदोर २ इनकोर प्रज करे हैं ।  
श्री १०५ मान गान्ही सदान का प्रमा रक कोई परा नहीं रगा है ।  
नाथ गान्ही सदान की ये साह सदान थी और जन की गीत थी ।  
सदान थी । किया जन कुछ नाकी नहीं रहीं हैं । आप ही नदोरों  
और इस कहें जाय कीसे सुचे प: गोविन्द जी की पुच्छ है जो  
ने कुछ जनान नहीं देते हैं । जन नाना महाराज इस से आपकी  
शरण में है । हमारी पार तो नाथ आप ही रगा प्रो जे । जन इस  
कहें जायें । इस से भद्रपूर में पतकोर श्री के सिनध और कीसी  
की नहीं जाने नेभी कुछ नदोर नहीं है । जो नदोरों प्रगर आपकी  
नहीं पुच्छें है इस कीसे पुच्छें । नाथ कोई कहता है कि गान्ही  
सदान नानाजी होठये हैं । कोई कहता है । कि श्रीमान ने मरनादिसे  
हैं । इसी प्रेन नर सुनारि पडते हैं । जन नदोरों नाथ इस निम्न  
को रगाते जीये हुनियों में रहें भी प्रगर नहीं है । नाथ जन



श्री

शालिस काणा  
गरीबाजना  
पारिकोस जिगा  
भरपुर-राज्य  
14-10-80

प्रनत श्री विष्णुपति श्री बाबा मदारकर  
के पुनीत चाण कमलों में मेरा काछका  
प्रणाम पहुँचे। साक्षात् श्री स्वर्णलक्ष्म  
हो। मैं यह श्री चाणों की वृथा से  
कुशल हूँ।

प्रभा दिनांक 3-10-80 को मैं भालु  
गया था। श्री पंडित जी मदारकर, मौजी,  
मि० चमेश्वर, लक्ष्मीराम, कान्दो समीप  
श्री चाणों में प्रणाम निवेदन करने जिजने  
का मुझे श्री पंडित जी मदारकर से  
आदेश दिया है। पंडित जी के पेशाव  
में मैं रुकावट चला रहे हूँ बाकी

स्वास्थ्य अच्छे रहा हूँ।  
एवं श्री चाणों की कुशलता जाननी  
चाहती हूँ। आतः कुशलता से  
अवगत करने की अनुकम्पा  
कॉ। तन्ना श्री चाणों की वृथा  
में आप निरन्तर बहती रहे व  
अनवरत बढ़ती रहे ऐसा अनु-  
पम आशा कर मुझ दीनदीन  
दासाबुडगत को वृथा का देने की  
वृथा कॉ। आशा है श्री श्रीगुरु  
जी व श्री चाणों के अनु प्रेमी  
मुझों को मेरा करवट प्रणाम  
पहुँचे।

कुशल पत्र आशय देने की वृथा  
कॉ। गौपाल कामकाज



मेरठ

आपका चार्ज रस-  
मेषक-  
विश्वम्भरसिंह  
H.E.  
पुलिस थाना गहीवाड़ा  
मेरठ  
(राजपूत)

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड  
INLAND LETTER CARD



श्री श्री श्री श्री सीतारामजी  
B. 66 कोतवाड़ा साउथ  
नं० 2 नई दिल्ली

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

विश्वम्भरसिंह

पिन PIN

14/1/80

दूसरा मोड़ SECOND FOLD



नहीं - श्री. भावा नाराजका स्वास्व  
वेसा है - देरी जोरों परगाड डरना

श्री. पण्डितजी जी को हदारा चरन  
धुका डरना क्या उनका इलाज है  
गया तबपति का क्या हाल है को  
लिरचना श्री भागना से उदना  
हराई है - प्राय भी - प्रपेन ह्या

का का पचाउ रावना - श्री. रोजे  
जी भूगोपा का पच पोस प्ररा

अच्छा इनाजियरीं बरके

भाडुप

बनका १००

उं वेते पर पोसले मेजा है -

पुंछा या गंरी पर पागना से

नहीं जा लदा तबपति देरी प्रप  
ह्य भी - रुदा डरना - श्री. उदेल

श्री. बाहिराउ १०३/ का चरन है

पच भरतपुर सिन्हा - जोर पर ६ पचा

१००/ अयेउ पच पेटे ही उली देन

लिरना पुका अवे डेवन की ०५ पचा

रजोते है - अगा - बाहा हो ती पौद

मरी - बरि नरा दिया जोर प्रपच

कि बुद्ध मोगे पर मिजना ह्या

जोका उचित लमोडा लिरना -

पौदे कास्व भावत प्रसाद श्री

पतना जी - प्रकाउ जी लन बरन

प्रगाड डेत है - तजा श्री. जी दी

भी जउ सी जोरों प्रगाड डरना

प्राय का प्रगा राम क्या है - क्या क्या

राज जी के भागना जानत बुद्ध रूप

इ लेने में लिर देना मोगा प्राय

पण्डित श्री. पण्डितजी जी का इलाज

जोका है तजा - प्रपेन प्राय



को भी इरना - गा कुछ सचो है  
 मे मिजवां - मिले पोय जेका  
 हं देवा के तथ्य है -

श्री. गिराज शहनाजी

श्री. प्रसाद लिपना -  
 तजा लिपना यह लड़े गुप  
 श्री. इष्टि बनोदे रक्तेन !

पोते लदप बनसे दु तो

काज बिस्तीमल बरिपा चिले गोता  
 511 511 51

बेते - जाना - बल बलक गड़े  
 लिपना बल ही मीर (चितेन) है  
 लिपना है - तजा प्रसाद गुप  
 रक्तेन 516 ही गजवी पर पयस  
 रक्षी देना

श्री. भरतपुर  
 22-12-22

श्रीमान् प्रणित जी ७६ चरनो ५ प्रसाद रक्षी  
 का हो - मैं भरतपुर का २५ १२ २० जनता है  
 धागपा था - यहां सब बड़ा लुशानता  
 है - आप लिपना मत रक्ता कल 5. 11. मापु  
 से मिलना - आप माजी के जाकर  
 लिपना सब गीत हैं - श्री. बाबू लाल  
 जी के कल ही प्रसाद जी के काज  
 लेंद्र मित्र - आपा - प्रबतवपति गीत  
 है - आज लुमेर चले गये है - राजा  
 ना - जाना रक्ताना जाना लेना गोता  
 राम रक्ताना है - मैं कल उन के काल  
 5. 11. मापु रे 3 काज जांकागा -  
 श्री. सुनी जी के बाबू लाल जी के जोर है  
 फगुन तनु कुछ नरम गर्म ही बरसाया  
 है फिर भी हा जोरों लिपना